



पाठ – दो रूलपुइ

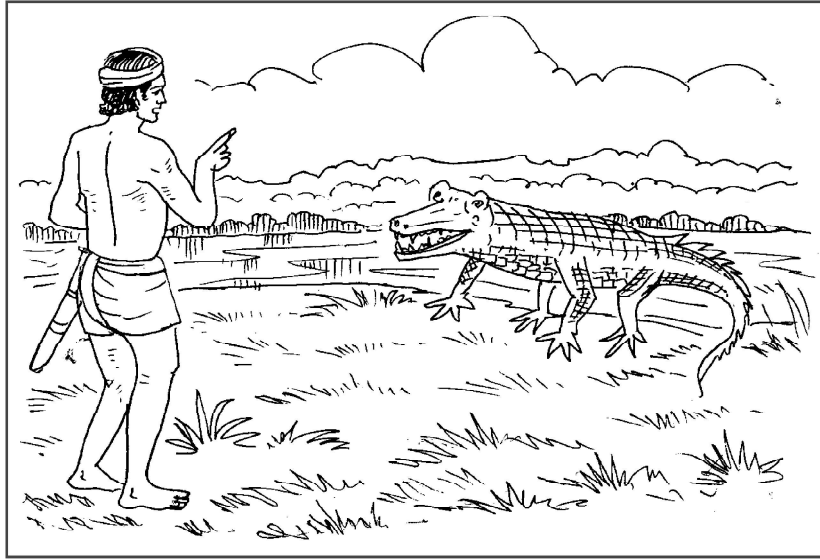
विश्व भर की लोक कथा साहित्य के पन्नों में अजगर से सम्बन्धित कई कथाएँ होती हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि आदि काल में अजगर की संख्या बहुत थी और लगता है कि आजकल इसकी संख्या बहुत घट गई हो। उनकी गतिविधि भी आज जो हो रही है इसकी तुलना में कई गुना रही होगी। अजगर घने जंगलों, सुनसान जलाशयों में तथा ऊँचे पर्वतों पर पाए जाते थे।

लुसाइ में भी अजगर से जुड़ी हुई कथाएँ बहुत ही प्रचलित हैं। बहुत ही पुराने जमाने की बात है; लुसाइ पहाड़ के चरण में एक छोटा-सा गाँव बसा हुआ था। गाँव के लोग पहाड़ पर साग-सब्जियाँ तथा अन्य खाद्य पौधे लगाते थे। जंगलों में फल-फूल आदि भी बहुत मिलते थे। उन लोगों को दुखों और परेशानियों की कोई गुंजाइश नहीं थी। सब लोग आनन्दपूर्वक रहते थे।

लुसाइ भाषा में अजगर को 'रूलपुइ' कहते हैं। एक दिन एक बड़ा भयानक और अतिकाय रूलपुइ पहाड़ से नीचे आया। उसका शरीर इतना लम्बा था कि कोई पूँछ के पास खड़े होकर देखे तो उसका सिर देख नहीं पाता था। शरीर इतना बड़ा और मोटा था कि वह बरगद के पेड़ जैसा दिखता था। उसकी दोनों आँखें तो जलती आग जैसी थी। उसका जीभ निकालता तो तलवार जैसा लगता था।

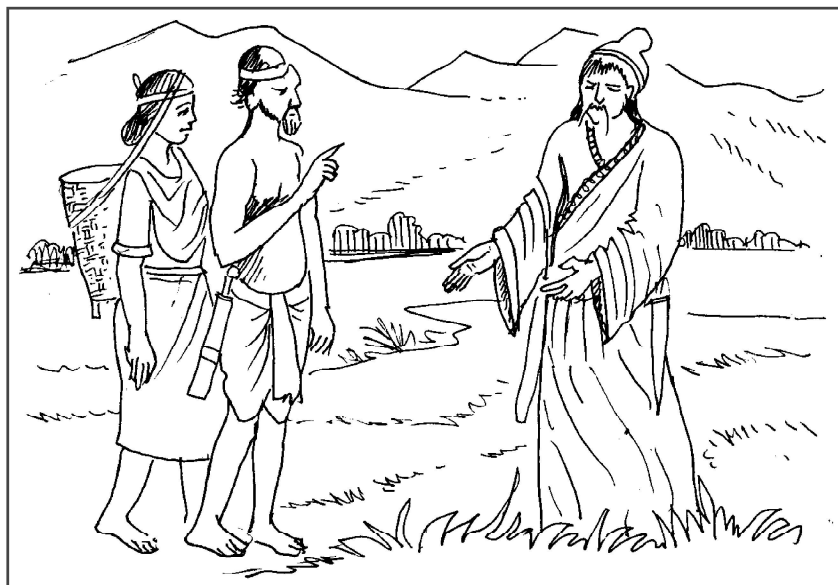
जो कोई भी उसके सामने आता उन सब को रूलपुइ निगल जाता। बकरी, भेड़िया, बछड़ा और अन्य पशु-पक्षी सब के सब एक-एक कर निगलना तो उसके लिए मामूली बात

थी, बड़े-बड़े पशु गाय, बैल, भैंस आदि को भी नहीं छोड़ता। ऐसी स्थिति में लोग हाहाकार करने लगे हुए। गाँव के सभी लोग विचार करने लगे। यदि इस तरह का काम जारी रहा तो सारा गाँव एक दिन मिट जायगा। इसलिए रूलपुइ के साथ एक समझौता करना चाहिए।



गाँव के लोगों ने रूलपुइ के साथ एक बात तय कर ली कि उसको हर दिन भोजन के लिए एक-एक पशु या मनुष्य दिया जाएगा। इसलिए इसी प्रकार का मारना, खाना छोड़ दो। अगर जिस दिन गाँववालों ने यह बात तोड़ दी तो उस दिन से इस गाँव के किसी भी प्राणी पर तुम्हारा पूरा अधिकार होगा। उस समझौते के अनुसार काम जारी रहा। कुछ महीनों के बाद उस गाँव के सभी पशु रूलपुइ के मुँह में चले गए। सारे पशु समाप्त हो जाने के बाद अब मानवों की बारी आई। इसलिए हर दिन एक-एक मनुष्य ने उस अजगर के भोजन में प्राण त्याग दिए।

एक दिन एक परदेशी उस गाँव में आया। वह चीन का रहनेवाला था। शाम हो गई, इसलिए उसने रात को एक घर में ठहरने का विचार किया। वह एक घर में आया और उस रात को वहीं काट कर सुबह को चले जाने की बात कही। वह उस घर में रहा। रात को उस घर के दंपति दुख भरी आवाज में रो रहे थे। रोने की आवाज सुनकर परदेशी अतिथि ने पूछा— “आप दोनों क्यों रो रहे हैं?”



उन्होंने उत्तर दिया – “ अतिथि महाशय, हमारे इस गाँव में एक बड़ा और भयानक रूलपुई है। उसके साथ किये एक समझौते के अनुसार प्रतिदिन एक पशु या एक मनुष्य उसके भोजन के लिए दिया जाता है। कल के लिए रूलपुई के भोजन की बारी हमारी हैं। हमारा केवल एक ही पुत्र है। कल हम उसे मृत्यु के मुँह में ढकेल रहे हैं। इससे ज्यादा दुख और क्या हो सकता है ? इसलिए हम रो रहे हैं।”

अतिथि ने कहा – “ बस, इस मामूली बात के लिए आप दोनों रो रहे हैं।”

अतिथि की इस बात को सुनकर दोनों आश्चर्य में पड़ गए और सोचने लगे कि इस अतिथि ने इतनी गंभीर बात को मामूली क्यों कहा है ? क्या वह पागल तो नहीं है ?

अतिथि ने उन दोनों के मन की बात समझ ली। उसने कहा– “ सच है, आप दोनों को परेशान होने की कोई बात नहीं है। आँसू पोंछ लीजिए और बेफिक्र रहिए। खाने-पीने की तैयारी कर खाइए और मेरे लिए भी कुछ दीजिए। इसके बाद जो भी करना है वह सब मेरा काम है। मुझ पर भरोसा रखिए; मैं सब सम्भालूँगा।”

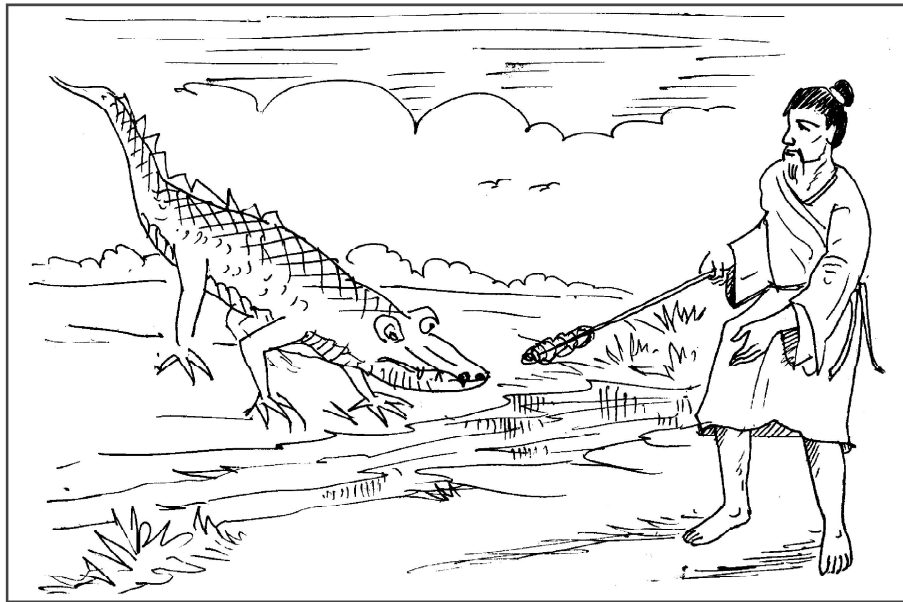
उन्होंने जल्दी से भोजन तैयार करके अतिथि सत्कार किया। अतिथि ने पूछा— “क्या आपके यहाँ भाला होगा ? अगर है तो मुझे दीजिए। घरवाले ने एक तेज और भारी भाला निकाल कर दिया। अतिथि ने फिर कहा— “आपके बेटे के कुछ पुराने वस्त्र होंगे, वे भी मुझे दीजिए।”

घरवालों ने खुशी से कुछ कपड़े दिए। अतिथि ने उसे भाले पर लपेट लिया। रात हो गई। वे सब रात को आराम से सोए।

अगले दिन अतिथि ने घरवालों के साथ खाना खाया। अतिथि रूलपुड़ के पास देर से गया। वहाँ पहुँचते ही रूलपुड़ ने उससे पूछा — “कौन है?”

अतिथि ने उत्तर दिया — “मैं हूँ, तुम्हारा भोजन।”

रूलपुड़ ने फिर पूछा — “इतनी देर क्यों हुई ? मेरे पेट में तो चूहे दौड़ रहे हैं। लम जानते नहीं, तुम्हारे न आने से सारा गाँव नष्ट होनेवाला है।”



उस समय अतिथि ने थोड़े अस्पष्ट शब्द कहकर अपनी कमीज निकाली और भाले पर फिर से लपेट कर रूलपुइ के मुँह में फेंक दिया। रूलपुइ ने अपना भोजन समझ कर उसे निगल लिया। थोड़ी देर बाद रूलपुइ बड़ी जोर की आवाज के साथ मर गया। उस आवाज को सुनकर सभी गाँववाले वहाँ इकट्ठे हुए जहाँ रूलपुइ मरा पड़ा था। मरे हुए भयानक रूलपुइ को देखकर गाँववाले अत्यन्त खुश हुए। उन्होंने उस परदेशी अतिथि का पुनः स्वागत किया और उसकी बड़ी प्रशंसा की।

कठिन शब्दों के अर्थ—

जलाशय	= जल भरा हुआ गहरा स्थल, तालाब, झील।
खाद्य	= खाने की चीज, खाने योग्य।
गुंजाइश	= स्थान, जगह, सामर्थ्य
अतिकाय	= बहुत बड़ा।
हाहाकार	= घबराहट की चिल्लाहट, कुहराम।
समझौता	= आपस का करार या निश्चय, निपटारा।
तय कर ली	= निश्चित कर ली, निर्णय कर ली।
आँसू पोंछ लीजिए	= धीरज बँधाइए।
बेफिक्र	= बेपरवाह, निश्चिन्त।
भाला	= एक प्रकार का हथियार, बरछा।
लपेट लिया	= घेर कर बाँध लिया, समेट लिया।
अस्पष्ट	= जो साफ न दिखाई दे; समझ में न आए, धुँधला।
निगल लिया	= घोंट लिया, खा जाना।
पुनः	= फिर, दोबारा।

प्रश्न-अभ्यास

1. लुसाइ पहाड़ के आस-पास के गाँव में रूलपुइ ने क्या-क्या किए ? गाँववालों और रूलपुइ के बीच क्या निर्णय हुआ ?
2. परदेशी अतिथि कहाँ का रहनेवाला था ? रात को जिस घर में वह ठहरा था उस घर की दुख-दशा कैसी थी ?
3. “ बस, इस मामूली-सी बात के लिए आप दोनों रो रहे हैं। ” वह ‘मामूली-सी बात’ क्या थी ? क्या अतिथि उस बात को मामूली प्रमाणित कर सका ?
4. परदेशी अतिथि ने रूलपुइ को कैसे मारा ?
5. अतिथि ज्ञानी है अथवा वीर ? सोदाहरण उत्तर लिखिए।
6. अपने माँ-बाप से पूछ कर मणिपुर की लोक-कथाएँ समझ लीजिए और उन्हें कक्षा में सुनाइए।
7. क्या आपने अजगर को कहीं देखा है ? अजगर के बारे में दस-पन्द्रह पंक्तियाँ लिखिए ।
8. लुसाइ पहाड़ कौन-से राज्य में स्थित है ? उत्तर-पूर्वी भारत का एक मानचित्र खींचकर उसमें लुसाइ पहाड़ निर्धारित कीजिए।
